SHRI UDAY VISHWANATH DESHPANDE

Shri Uday Vishwanath Deshpande, popularly known as 'Mallakhamb Vishwa Guru' has been the Honorary General Secretary and Chief Coach of the 98-year-old premier and pioneer physical education institution, the Shree SainarthaVyayam Mandir, Dadar, for the last 42 years. He is also the Founder Director and Honorary Secretary of Vishw'a Mallakhamb Federation, through which he conducted two Mallakhamb World Championships, in which 15 countries participated. He is instrumental in starting National Mallakhamb Federations in other countries.

2. Born on 20th July, 1953, Shri Deshpande joined Customs and Central Excise Department and retired as Deputy Commissioner in 2013. A Wrestling and Mallakhamb enthusiast from childhood, all his personal time was dedicated to promoting the dying Indian Physical Culture of Mallakhamb. He had realized early the potential that Mallakhamb held for the health, fitness and quality of life at the level of the individual, the community and for all of humankind. At the tender age of 18, he vowed to nurture and revive Mallakhamb and began his tireless, passionate work.

3. Across 50 years, Shri Deshpande has travelled to every district in Maharashtra, every state in India and conducted thousands of Mallakhamb workshops, across all socio-economic groups, reaching even those most marginalized. He is credited with having trained over 1000 Mallakhamb enthusiasts from more than 52 countries, and has conducted several Mallakhamb workshops covering 3 continents Asia, Europe and USA. Not only did he start Mallakhamb centres across the country, but he also ensured standardized training by developing a pedagogy for training and instructions in Mallakhamb. He initiated and encouraged research in the field and designed teachers training courses. He wrote extensively, about Mallakhamb in many languages. His contribution includes meticulous documentation and building a body of work to be available for posterity. This includes the international “Rule Book' of Mallakhamb and spelling out the criteria for judging international Mallakhamb events.

4. Shri Deshpande broke glass ceilings of all kinds. He was the first to coach adults and senior citizens in Mallakhamb. He welcomed girls and women into the male-dominated sports arena and encouraged women to perform on the traditionally male bastion of the Pole Mallakhamb. He 'reached the unreached' by training the visually-challenged, children with special needs, orphans and tribals. He worked relentlessly for the recognition of Mallakhamb as a sport by the Government of India, the Indian Olympic Association and the Ministry of Railways, Government of India. He has mentored 15 Shiv Chhatrapati awardee players, 3 Shiv Chhatrapati Best Coach Awardees, including one Mallakhamb Arjun award winner.

5. Shri Deshpande's work of transforming Mallakhamb from a little-known traditional exercise to a sport that has a global presence won him over 50 National and International awards along with the Shiv Chhatrapati award as an organiser, Dadoji Kondadev Award as Best Coach and Lifetime Achievement Award by the Government of Maharashtra.

श्री उदय विश्वनाथ देशपांडे

श्री उदय विश्वनाथ देशपांडे 'मल्लखम्ब विश्व गुरु' के नाम से प्रसिद्ध हैं। वह पिछले 42 वर्षों से 98 वर्ष पुराने प्रतिष्ठित, अग्रणी, शारीरिक शिक्षा संस्थान, श्री सैनार्थ व्यायाम मंदिर, दादर के मानद महासचिव और मुख्य कोच रहे हैं। वह विश्व मल्लखम्ब संघ के संस्थापक निदेशक और मानद सचिव भी हैं, जिसके माध्यम से उन्होंने दो 'मल्लखम्ब विश्व स्पर्धा का आयोजन किया, इस स्पर्धा में 15 देशों ने भाग लिया। वे अन्य देशों में राष्ट्रीय मल्लखंब संघ शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

2. 20 जुलाई, 1953 को जन्मे, श्री देशपांडे ने सीमा शुल्क और केंद्रीय उत्पाद शुल्क विभाग में पदभार संभाला और वर्ष 2013 में उपायुक्त के रूप में सेवानिवृत्त हुए। उनके मन में बचपन से ही कुश्ती और मल्लखम्ब को लेकर उत्साह था, उनका सारा समय भारत से लुप्तप्राय कसरत की कला मल्लखम्ब को बढ़ावा देने के लिए समर्पित था। उन्होंने मल्लखम्ब की इस क्षमता को जल्दी ही जान लिया था कि मल्लखम्ब व्यक्ति, समुदाय और समस्त मानवजाति के स्वस्थ, निरोगी और बेहतर जीवन को बनाए रखने में सहायता करता है। 18 वर्ष की कम आयु में ही, उन्होंने मल्लखम्ब को आगे बढ़ाने और उसे पुनर्जीवन देने का प्रण किया और उन्होंने इस दिशा में पूरे मनोयोग से अथक प्रयास किए।

3. 50 वर्षों के दौरान, श्री देशपांडे ने महाराष्ट्र के हर जिले, भारत के हर राज्य की यात्रा की है और सभी सामाजिक–आर्थिक समूहों के बीच हजारों मल्ललखम्ब कार्यशालाओं का आयोजन किया है, यहां तक कि वह उन तक पहुंचे हैं जो समाज में एकदम हाशिए पर हैं। उनके पास 52 से अधिक देशों के 1000 से अधिक मल्लखम्ब प्रेमियों को प्रशिक्षण देने का भी श्रेय है, और उन्होंने 3 महाद्वीपों एशिया, यूरोप और अमेरिका का दौरा करते हुए कई मल्लखम्ब कार्यशालाएं आयोजित की हैं। उन्होंने न केवल देश भर में मल्लखम्ब केंद्रों की शुरुआत की, बल्कि मल्लखम्ब में प्रशिक्षण और अनुदेशों के लिए नियम–पुस्तिका तैयार करके मानकीकृत प्रशिक्षण भी सुनिश्चित किया। इन्होंने इस क्षेत्र में अनुसंधान की शुरुआत की और शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तैयार किए। इन्होंने मल्लखम्ब के विषय में अनेक भाषाओं में विशद रूप से लिखा। उनके योगदान में बारीक दस्तावेज निर्माण प्रक्रिया और एक कार्य निकाय का निर्माण शामिल है, जिसका लाभ भावी पीढ़ी को मिलेगा। इसमें मल्लखम्ब की अंतरराष्ट्रीय "नियम–पुस्तिका" और अंतरराष्ट्रीय मल्लखम्ब प्रतियोगिताओं में निर्णय संबंधी मानदंड निर्धारित करना शामिल है।

4. श्री देशपांडे ने हर तरह की सीमाओं को तोड़ा। वे मल्लखम्ब में वयस्कों और वरिष्ठ नागरिकों को प्रशिक्षित करने वाले पहले व्यक्ति थे। वे पुरुष–प्रधान खेलों में लड़कियों और महिलाओं को लेकर आए और महिलाओं को पारंपरिक तौर पर पुरुष का खेल माने जाने वाले मल्लखम्ब में हाथ आजमाने के लिए प्रोत्साहित किया। इन्होंने दृष्टिहीन, दिव्यांग बच्चों, अनाथों और आदिवासियों को प्रशिक्षण दिया, इस तरह वह इस प्रशिक्षण के माध्यम से ऐसे लोगों तक 'पहुंचे जो पहुंच से बाहर' थे। उन्होंने भारत सरकार, भारतीय ओलंपिक संघ और रेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मल्लखम्ब को खेल के रूप में मान्यता देने के लिए निरंतर प्रयास किया। उन्होंने एक मल्लखम्ब अर्जुन पुरस्कार विजेता सहित 15 शिव छत्रपति पुरस्कार विजेता, 3 शिव छत्रपति सर्वश्रेष्ठ कोच पुरस्कार विजेताओं का मार्गदर्शन किया है।

5. श्री देशपांडे ने मल्लखम्ब जैसे पारंपरिक व्यायाम को खेल का रूप देने का कार्य किया जिसके बारे में लोग कम जानते थे और आज इसकी प्रसिद्धि विश्व भर में है, इस मल्लखम्ब को 50 से अधिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए, इन पुरस्कारों में आयोजक के रूप में शिव छत्रपति पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ कोच के रूप में दादोजी कोंडदेव पुरस्कार और महाराष्ट्र सरकार द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड शामिल है।